खेत में लहलहाती क्रांति

नितिन यादव

चारों ओर गन्ने के खेत हैं। एक छोटे से खेत में एक किसान फावड़ा लेकर जमीन खोद रहा है। उसके आस-पास से गुजरते किसान उसे देखकर हंस देते हैं। कुछ तो यहां तक कहते हैं कि यह पागल कब सुधरेगा? किसान अपने खेत में मगन है, महज तीन बीघा हल्दी की खेती को लेकर वह कुछ पागल सा ही है। मेरठ के रोहटा ब्लॉक के गांव पूठ खास का किसान राजपाल सैनी कहता है कि बाबू जी मेरे पास ज्यादा जमीन नहीं है। ये खेत भी मेरे नहीं हैं, मैंने किराए पर लिए हैं। मुझे इस बात का सुकून है कि कुछ ऐसा कर रहा हूं, जिसकी जरूरत आने वाले समय में हर किसान को पड़ेगी। किसान ही क्यों, जिस तरह से रासायनिक उत्पाद थाली में जहर घोल रहे हैं, एक दिन हर घर में ऑर्गेनिक उत्पाद ही होंगे। ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, अर्जेंटीना और ब्राजील जैसे कई देशों में ऑर्गेनिक खेती बड़े पैमाने पर होती है। कई जगह तो ऑर्गेनिक फूड स्टोर और रेस्टोरेंट भी हैं। हमारे देश में भी किसान ऑर्गेनिक खेती के महत्व को समझ रहे हैं। मेरठ क्षेत्र में ऐसे किसानों की कमी नहीं है, जो कई परेशानियों के बाद भी कार्बनिक खेती कर रहे हैं। इनमें से कई के पास ज्यादा जमीन नहीं है, लेकिन कुछ अलग करने का पूरा जज्बा जरूर है। गांव डूंगर के मामचंद तो काफी आगे बढ़ चुके हैं। चमड़े के कारखाने से सटा होने के कारण उनका खेत लगभग बंजर हो गया था, लेकिन उन्होंने अपने बंजर पड़े खेत को कार्बनिक खादों से फिर उर्वर बना दिया। इतना ही नहीं इस प्रकार के सभी किसान अपने खाने के लिए भी केवल ऑर्गेनिक उत्पादों का ही प्रयोग करते हैं। मेरठ के ही गांव खटकी के किसान अमर सिंह गन्ने की खान कहे जाने वाले क्षेत्र में अपनी हल्दी के रंग के कारण प्रसिद्ध हैं। उनका कहना है कि वह गन्ने से कहीं ज्यादा मुनाफा हल्दी की ऑर्गेनिक खेती करके कमा लेते हैं। इन सभी किसानों का मजाक उड़ाने वाले भी इस बात से इंकार नहीं करते हैं कि ऑर्गेनिक खेती से जमीन को भी फायदा होता है। यह बात और है कि अमर सिंह और राजपाल सैनी जैसी हिम्मत दिखाने वालों की संख्या अभी कम ही है। विशेषज्ञ भी ऑर्गेनिक फार्मिंग के सुनहरे भविष्य से इन्कार नहीं करते। किसानों के साथ लगातार संपर्क में रहकर ऑर्गेनिक फार्मिंग को बढ़ावा देने की कोशिशों में लगे नीर फाउंडेशन के रमन त्यागी का कहना है कि ऑर्गेनिक मंडी बनाने की खास जरूरत है। ऐसा होगा तो किसान बेहतर ढंग से अपने उत्पाद बेच सकते हैं और लोगों तक भी आसानी से ऐसे उत्पाद पहुंच सकते हैं। इसी बारे में पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री सोमपाल शास्त्री का कहना है कि ऑर्गेनिक खेती से पूरे पर्यावरण तंत्र का फायदा होता है। रासायनिक खादों के कारण लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण को काफी नुकसान हो रहा है। कैंसर जैसी बीमारियां ऐसे ही कारणों की देन हैं। विदेशों की तरह अभी हमारे देश में संगठित तौर पर ऑर्गेनिक खेती नहीं होती है और इसे लेकर मजबूत कानून भी नहीं है। मेरठ सहित जिन भी क्षेत्रों में यह ऑर्गेनिक क्रांति हो रही है, उसे सरकारों को संरक्षण देकर पूरे देश में ले जाना होगा।

-सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरमेंट की फैलोशिप के तहत तैयार रिपोर्ट